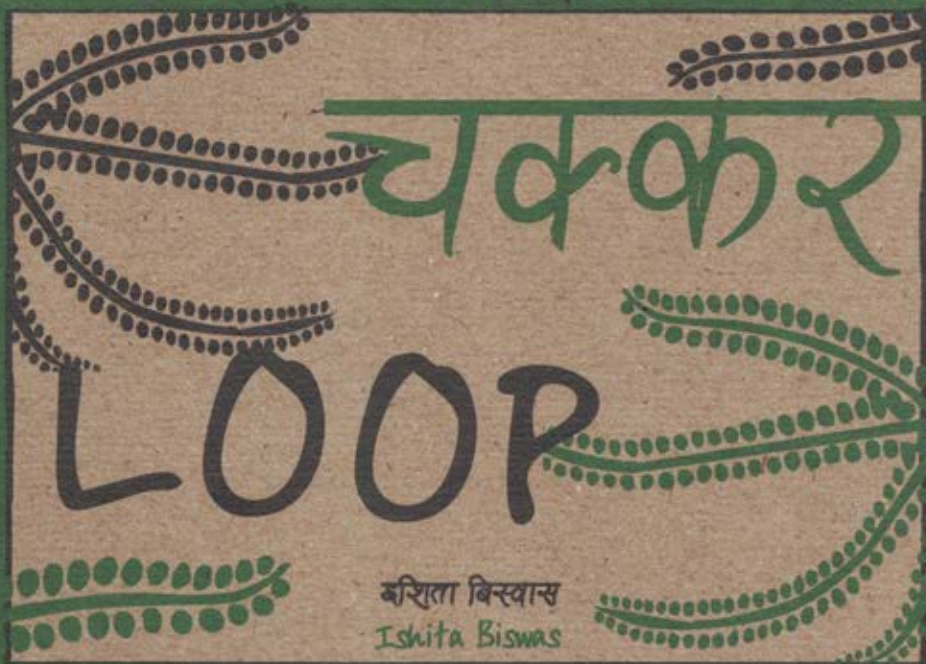


LOOP चक्कर LOOP चक्कर LOOP चक्कर LOOP

चक्कर LOOP चक्कर LOOP चक्कर LOOP



इशिता बिस्वास  
Ishita Biswas

चक्कर LOOP चक्कर



एकलव्य

चक्कर LOOP चक्कर LOOP चक्कर





























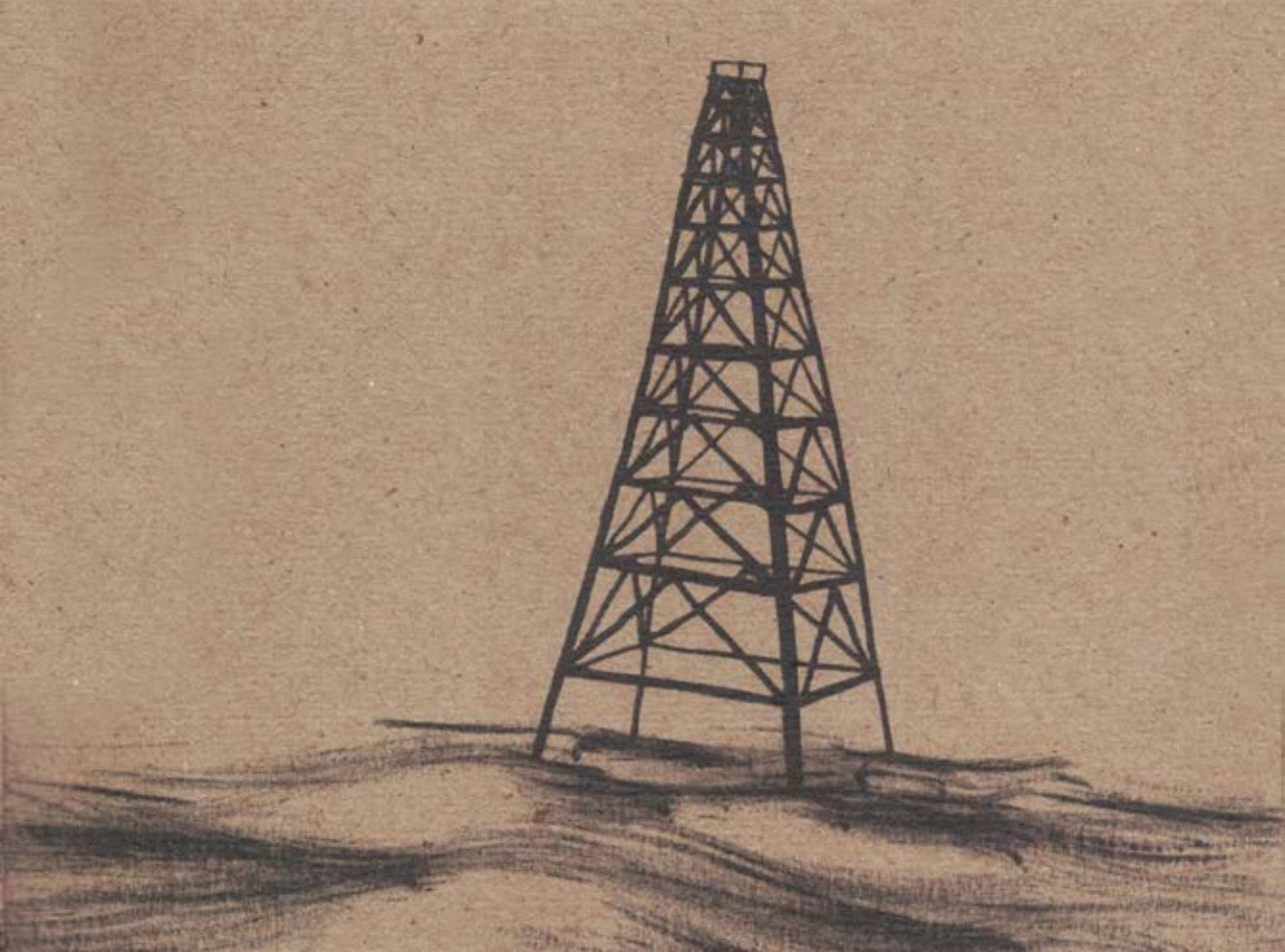












घक्कर / LOOP

संकल्पना व चित्र: इशिता बिस्वास

डिज़ाइन: कनक शशि



इशिता बिस्वास, दिसम्बर 2016

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में चित्रकार और प्रकाशक का जिक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

दिसम्बर 2016 / 500 प्रतियाँ (प्रायोगिक संस्करण)

मार्च 2017/ 2000 प्रतियाँ

कागज़: 140 gsm ब्राउन क्राफ्ट पेपर

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN:978-93-85236-20-4

मूल्य: ₹ 25.00

प्रकाशक: एकलव्य

ई-10, शंकर नगर वीडिए कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)

फोन: +91 755 255 0976, 267 1017

[www.eklavya.in/books@eklavya.in](http://www.eklavya.in/books@eklavya.in)

मुद्रक: आर.के. सिक्युरिटी प्रा. लि., भोपाल, फोन: +91755 268 7589

इशिता बिस्वास ड्रॉइंग व विजुअल डिज़ाइन के क्षेत्र में कार्य करती हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र पढ़ने के बाद उन्होंने सृष्टि स्कूल ऑफ आर्ट, डिज़ाइन - टेक्नोलॉजी से आर्ट - डिज़ाइन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वो अपनी रचनात्मक प्रक्रिया से धरती पर जीवन के जटिल ताने-बाने को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करती हैं।

Ishita works in the realm of Drawing & Visual Design. After studying her Bachelor's in Sociology from the University of Delhi, she pursued a Diploma in Art & Design from Srishti School of Art, Design & Technology. Through visual expression she constantly attempts to negotiate with different perspectives on the functioning of life on earth.

[www.ishitabiswas.tumblr.com](http://www.ishitabiswas.tumblr.com)

धरती पर बेहद आम तत्वों से ही बेहद पेचीदा जीवन कुल्लांचे मारता है। कभी-कभी कोई एक बहुत खास हो जाना चाहता है। तो इसी जीवन में एक भँवर उठता है एक चक्कर टूटता है। कहीं हम खुद को ज़्यादा खास तो नहीं मान बैठे हैं? इसी को सामने लाती ये कहानी...

There are these simplest elements on the earth that nurture the most complex loops of life. This natural system reveals its sensitivity to the increasing dominance of a single element. "Are we taking ourselves little too seriously?"

This book is a reminder of the most obvious story of present times.



एकलव्य

मूल्य: ₹ 25.00



9 789385 236204



parag

AN INITIATIVE OF  
TATA TRUSTS